THRU the BIBLE



स्वागत है दोस्तों

ये **परमेश्वर के संसाधन** हैं जिन्हें आप अपनी गति से पढ़ सकते हैं।



अपनी सुविधानुसार

आप सारी सामग्री एक बार में पढ़ सकते हैं
(**30-45 मिनट** - पढ़ें, मनन करें और अमल करें)

या

हर दिन कितना पढ़ना है, यह चुनें

या

अपनी गति से रुकने और फिर से शुरू करने के लिए हमारे सुझाए गए विरामों का उपयोग करें।

प्रभु के साथ बिताया गया आपका समय
उनके साथ आपके रिश्ते को समृद्ध करे।

आपके विचार के लिए

जीवन जीने के लिए ईश्वर की बुद्धि का उपयोग क्यों करें? Page 04

इस धर्मग्रंथ अध्ययन का उपयोग कैसे करें Page 05

आपके अध्ययन के लिए
धर्मग्रंथों के माध्यम से ईश्वर और उनके वचनों से जुड़ना Page 07

आप ईश्वर की बुद्धि का उपयोग अपने जीवन में कैसे कर सकते हैं? Page 22

चिंतन करें और लागू करें
परमेश्वर के वचन का अनुप्रयोग Page 23

आपने क्या सीखा?
टिप्पणियाँ Page 27

क्यों
जीवन जीने के लिए **परमेश्वर की बुद्धि का** उपयोग करें?

क्योंकि

परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह
की टीम में शामिल होने के लिए चुना है।

यीशु मसीह
हमारे प्रभु

उनका राज्य एक
प्रकाश का राज्य है

यह एक उच्च बुलावा है;
एक पवित्र बुलावा;
एक स्वर्गीय बुलावा

हम
स्वर्ग के नागरिक हैं

पृथ्वी पर **मसीह के प्रतिनिधि** के रूप में भेजे गए

परमेश्वर के वचन से सुसज्जित और सशक्त
जो हमें बताता है कि पृथ्वी पर स्वर्ग के नियमों (परमेश्वर के मानकों) के अनुसार कैसे जीना है।

परमेश्वर की इच्छा को
पृथ्वी पर लागू करना

- शिष्य बनाना
- समुदायों पर प्रभाव

परमेश्वर का नमक और प्रकाश होना

विजय पाना
अंधकार का साम्राज्य
स्वार्थी दुनिया और शैतान पर

कैसे करें
उपयोग
इस धर्मशास्त्रीय संवाद का



प्रार्थना से शुरुआत करें
प्रत्येक पाठ शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में विकसित करने के लिए करें।



पहले बाइबल का अंश पढ़ें।
परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपकी आँखें खोलें और उनके वचन की आपकी समझ को गहरा करें।



यदि आप इस अंश पर डॉ. मैक्गी की पूरी शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो TTB.org पर जाएँ, ऐप डाउनलोड करें, इसे YouTube पर देखें, या यह सामग्री पढ़ें।



प्रत्येक शिक्षा के बाद, आप अपने विचार के लिए या, यदि आप इसे एक समूह के रूप में पढ़ रहे हैं, तो चर्चा के लिए यहाँ सूचीबद्ध धर्मशास्त्रीय संवाद प्रश्नों को देख सकते हैं।



आत्मा से प्रार्थना करें कि वह आपको जो दिखाना चाहता है, उसे हृदयंगम करने में आपकी मदद करे।

मसीह का वचन तुम्हारे हृदय में सम्पूर्ण बुद्धि और शिक्षा सहित भरपूरी से बसे...
~ कुलुस्सियों 3:16

व्यक्तिगत तैयारी

व्यक्तिगत तैयारी का अर्थ है कि आप इस सामग्री को सप्ताह के दौरान स्वयं पढ़ें।

यदि आप किसी समूह का हिस्सा हैं, तो एक साथ मिलकर और साझा करके आपका योगदान सामूहिक आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करेगा।

मिलें बढ़ें बाँटें

मिलें, बाँटें और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें



मिलें
सप्ताह में एक बार

आओ **तैयार होकर**

टीटीबी की शिक्षाएँ पढ़ें, सुनें या देखें

कोई उपदेश नहीं। कोई शिक्षा नहीं। बल्कि **एक-दूसरे से साझा करना और सीखना।**

एक साथ मिलना

चर्चा करते हुए कि आपने **परमेश्वर की बुद्धि** से क्या प्राप्त किया

सीखना

धर्मग्रंथों के प्रश्नों पर चर्चा

अंत में प्रार्थना

अपने अगले मिलन के लिए **पहले से तैयारी करें**

आपके अध्ययन के लिए

पवित्र शास्त्र : उत्पत्ति 1:2-25
पढ़ने का समय : 10-15 मिनट

प्रार्थना

आगे बढ़ने से पहले, हम एक मिनट लें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदय, मन, कान और आँखों को मार्गदर्शन करे, ताकि हम उसकी दिव्य योजना को समझ सकें।

बाइबल का पद

पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।

- उत्पत्ति 1:2

1 बाइबल क्या सिखाती है ?

डॉ. मैक्गी मानते हैं कि उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के बीच एक बड़ी दुर्घटना घटी थी।

बनि आकार के
(तोहू)
मतलब
बर्बादी, रिक्तता, अराजकता
हिब्रानी भाषा में

खालीपन
(बोहू)
मतलब
खालीपन, उजाड़
हिब्रू भाषा में

यशायाह 48:15 में लिखा है : "**परमेश्वर ने पृथ्वी को व्यर्थ (तोहू) नहीं बनाया।**" इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने पृथ्वी को **संपूर्ण** और **रहने योग्य** बनाया था, लेकिन किसी घटना ने उसे **उजाड़** कर दिया।

जहाँ **परमेश्वर नहीं**, वहाँ **अंधेरा** है।

2

उत्पत्ति 1:2 **में लिखा है, "गहरे जल के ऊपर अंधकार था।"**

डॉ. मैक्गी कहते हैं कि अंधकार का मतलब है – **परमेश्वर की मौजूदगी न होना**। जब परमेश्वर नहीं होता, तो वहाँ बर्बादी और खालीपन रह जाता है।

लूसिफ़र का गिरना और आदम से पहले का समय

3

डॉ. मैक्गी मानते हैं कि शायद **आदम से पहले** भी पृथ्वी पर कुछ और लोग या जीव रहते थे।

डॉ. मैक्गी इस आपदा को **लूसिफ़र (शैतान) के गिरने** से जोड़ते हैं।

शैतान के विद्रोह के कारण **पूरी दुनिया** को भी दुख उठाना पड़ा होगा।

पवित्र आत्मा का काम- **रचना पर गहरा विचार करना**

4

उत्पत्ति 1:2 -**"परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मंडरा रहा था।"**

""**मंडराना**" का मतलब है – **देखभाल करना**,
जैसे एक मुर्गी अपने चूजों की रक्षा करती है।"

पवित्र आत्मा की मौजुदगी ने नई रचना शुरू की।

आत्मिक उपयोग–पवित्र आत्मा के माध्यम से नया जन्म

5

डॉ. मैक्गी कहते हैं कि जैसे पवित्र आत्मा ने पृथ्वी को फिर से बनाया, वैसे ही वह हमारे **आत्मिक नए जन्म** का कारण भी है।

योहन 3:5 –
"जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

पानी = परमेश्वर का वचन
आत्मा = पवित्र आत्मा

जैसे पवित्र आत्मा ने **पृथ्वी बनाई,**
वैसे ही वह हमें भी नया जीवन देता है।

बीच की कड़ी

उत्पत्ति 1:2 और उद्धार

3 चरण **पृथ्वी के निर्माण** के

डॉ. मैकगी **उत्पत्ति 1:1-31 में तीन अलग-अलग चरण देखते हैं**

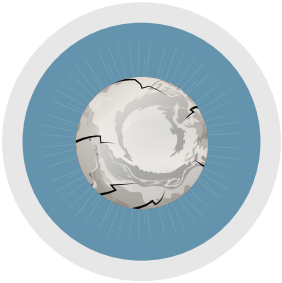
चरण 1



संपूर्ण जगत की रचना

परमेश्वर ने सब कुछ बनाया
(उत्पत्ति 1:1)

चरण 2



पृथ्वी का कंपन

एक आपदा ने
पृथ्वी को "बिना आकार और
शून्य" छोड़ दिया (उत्पत्ति 1:2)

चरण 3



पृथ्वी का निर्माण

परमेश्वर ने छह दिनों में पृथ्वी का
पुनर्निर्माण और संरचना की
(उत्पत्ति 1:3-31)
(निर्गमन 20:11)

6 दिन **दिव्य व्यवस्था और रचना** के

डॉ. मैकगी इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि सृष्टि कैसे **व्यवस्था, प्रगति, तत्परता और पूर्णता** दर्शाती है।

रचना करने के वास्तविक दिन थे 24 दिन घंटे

डॉ. मैक्गी पुष्टि करते हैं कि **सृष्टि के दिन 24 घंटे के दिन थे**

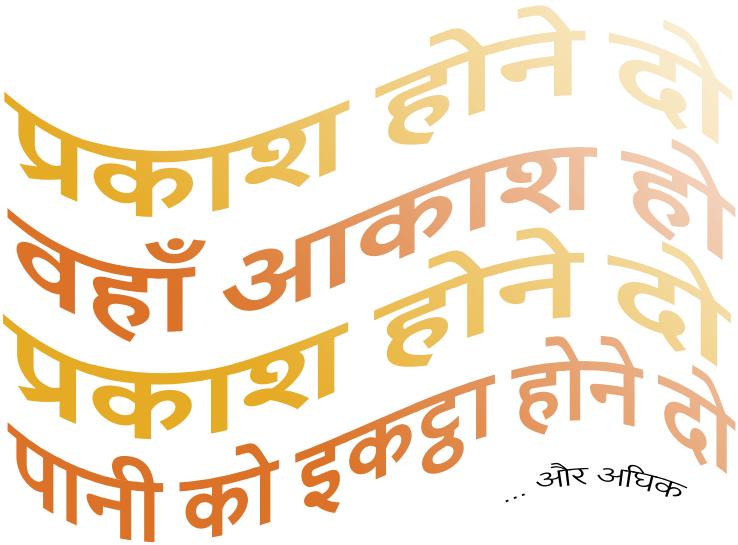
(निर्गमन 20:11)

वे कहते हैं, **"मुझे नहीं लगता कि इससे और कुछ प्राप्त किया जा सकता है।"**

यह उन व्याख्याओं का खंडन करता है जो इन्हें लंबे **युगों या समयावधियों के रूप में देखती हैं।**

'उजियाला हो' कथन-
सृष्टि के लिए परमेश्वर की आज्ञाएँ

उत्पत्ति 1, **"हो" कथनों** को (10 बार) दर्ज करता है:



सृष्टि के दस
दिव्य आज्ञाएँ

सृष्टि के
दस आज्ञाएँ

इनकी तुलना दस आज्ञाओं से
की जाती है,और इन्हें **दस**
दिव्य आज्ञाएँ कहा जाता है।

यह परमेश्वर के पूर्ण अधिकार पर ज़ोर देता **है**
अपने बोले हुए वचन के माध्यम से संसार की रचना करने में।

6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 1 | प्रकाश
(उत्पत्ति 1:3-5)



डॉ. मैकगी **अराजकता से व्यवस्था लाने के लिए परमेश्वर के बोलने के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।**

6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 2 | वायुमंडल
(उत्पत्ति 1:6-8)



बाइबल में तीन स्वर्ग



वायुमंडल
(जहाँ पक्षी उड़ते हैं)



अंतरिक्ष
(तारे)



स्वर्ग
(ईश्वर का निवास)

6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 3 | शुष्क भूमि और वनस्पति जीवन

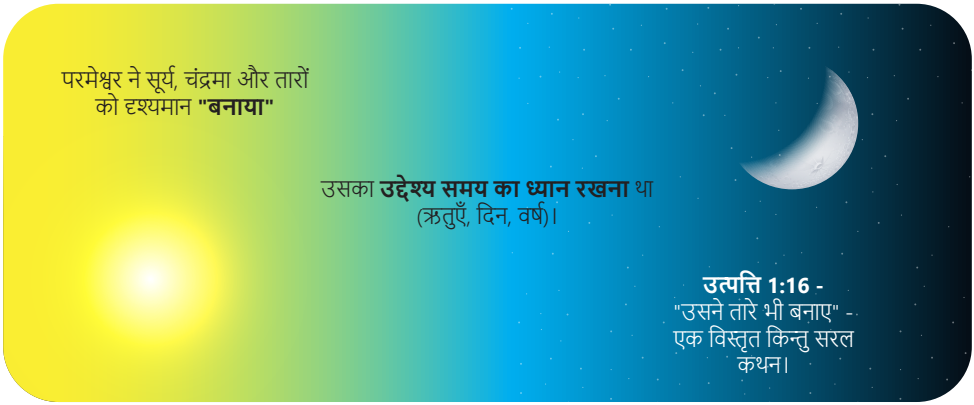
(उत्पत्ति 1:9-13)



6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 4 | सूर्य,चंद्रमा और तारे

(उत्पत्ति 1:14-19)



6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 5 | समुद्री और उड़ने वाले जीव

(उत्पत्ति 1:20-23)



6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 6 | स्थलीय पशु और मनुष्य

(उत्पत्ति 1:24-31)



मनुष्य की रचना
एक अनोखी घटना

उत्पत्ति 1:26-27 - परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएँ।"

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है

शास्त्र के सबसे महान कथनों में से एक।

"परमेश्वर के स्वरूप" का क्या अर्थ है?



मनुष्य त्रिएक है (आत्मा, प्राण और शरीर - 1 थिस्सलुनीकियों 5:23)

मनुष्य में **आत्म-चेतना, स्वतंत्र इच्छाशक्ति और नैतिक ज़िम्मेदारी होती है।**

मनुष्य एक **अद्वितीय व्यक्तित्व है।**

"इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया"

रचना के लिए इब्रानी शब्द

אָרָב

(बारा)

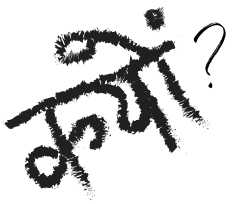
उत्पत्ति 1 में **तीन बार** प्रयुक्त हुआ है



उत्पत्ति 1:1	उत्पत्ति 1:21	उत्पत्ति 1:27
शारिक जगत की रचना की	**जीवन** की रचना	**मनुष्य** की रचना

मनुष्य **कुछ नया था, जानवरों से अलग।**

परमेश्वर केवल **मनुष्य की रचना** के बारे में **विस्तृत जानकारी** देता है, ब्रह्मांड के बारे में नहीं।



क्योंकि **परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य अपने मूल, अपने रचयिता के बारे में जाने,** न कि **पूरे ब्रह्मांड की** व्याख्या करे।

परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया

पुरुष और नारी की रचना कैसे हुई, इसका विवरण उत्पत्ति 2 में दिया गया है।

ब्रह्मांड की रचना का केवल संक्षिप्त उल्लेख किया गया है,
लेकिन **मनुष्य की रचना पर ज़ोर दिया गया है।**

इब्रानियों 11:3

सृष्टि "शून्य से" बनाई गई थी
(बाहर से कुछ नहीं)

परमेश्वर का आशीर्वाद और गुणा करने की आज्ञा



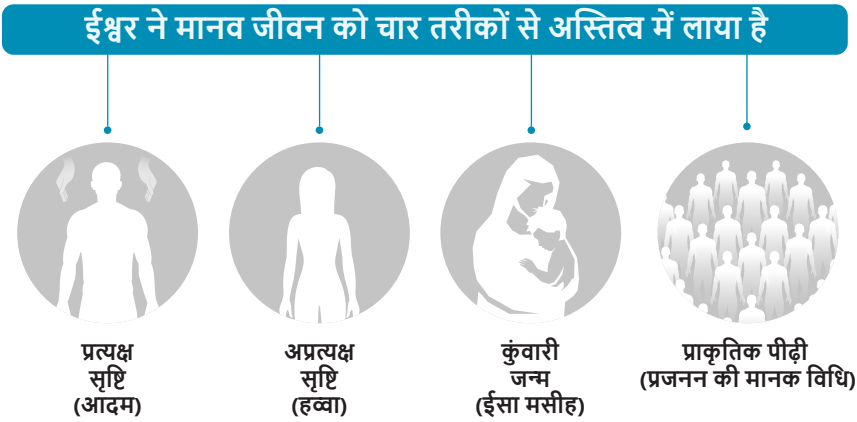
उत्पत्ति 1:28
और परमेश्वर ने उनको आशीष दी; और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"

परमेश्वर ने सृष्टि में **मानवजाति को एक विशेष भूमिका दी थी।**

यौन संबंध और प्रजनन परमेश्वर द्वारा ही रचे गए थे - ये कोई नई खोज नहीं हैं।

समाज ने कामुकता को **विकृत और पतित** कर दिया है, लेकिन परमेश्वर का उद्देश्य इसे शुद्ध और सुंदर बनाना था।

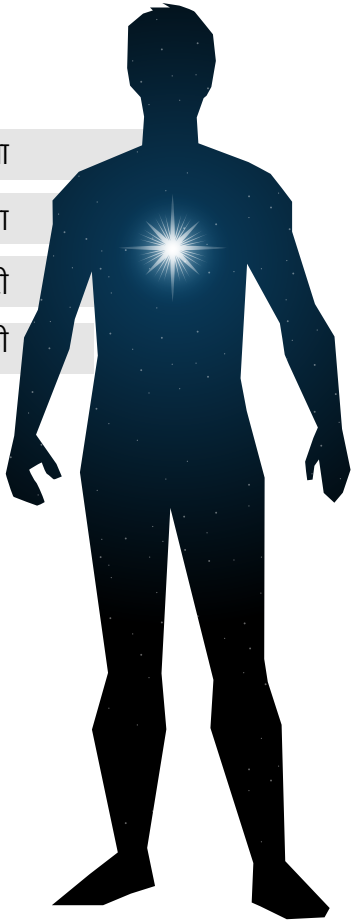
परमेश्वर ने मानव जीवन को चार तरीकों से अस्तित्व में लाया है



ईश्वर के स्वरूप में मनुष्य की नैतिक ज़िम्मेदारी

ईश्वर ने **मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया**, उसे

- आत्म-चेतना
- स्वतंत्र इच्छा
- नैतिक ज़िम्मेदारी
- स्वामी ईश्वर के प्रति जवाबदेही



"पृथ्वी को पुनः भरने" का अर्थ

"पुनः भरने" शब्द से पता चलता है कि
आदम से पहले पृथ्वी पर लोग रहते थे।

यह आदम-पूर्व
दुनिया के नष्ट होने के विचार का समर्थन करता है।

मनुष्य की भूमिका: पृथ्वी पर अधिकार करना

परमेश्वर ने **मनुष्य को पृथ्वी पर अधिकार** करने के लिए कहा



इसमें शामिल है

वैज्ञानिक खोज (नीतिवचन 25:2: परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है, परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।")

अन्वेषण और सीखना

मनुष्य को परमेश्वर के छिपे हुए खज़ानों को उजागर करने के लिए **बुद्धि और जिज्ञासा** दी गई थी।

सृष्टि पर प्रभुत्व

परमेश्वर ने आदम से कहा था कि "प्रभुत्व रखो", जिसका अर्थ है कि **आदम को पृथ्वी पर शासन करने के लिए बनाया गया था।**

आदम सिर्फ़ एक **महिमावान माली ही नहीं**, बल्कि एक **शासक** था।

पतन से पहले, **आदम का प्रकृति पर** पूर्ण **नियंत्रण था**।

यीशु ने इस प्रभुत्व का प्रदर्शन किया।



तूफ़ान को शांत किया (मरकुस 4:39)



अन्न की मात्रा बढ़ाई (यूहन्ना 6:1-14)

पाप के संसार में आने से पहले **आदम** के पास भी ऐसा ही **अधिकार** हो सकता था।

मानवजाति का मूल आहार

उत्पत्ति 1:29
फिर परमेश्वर ने उनसे कहा, "सुनो, जितने बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं;



मनुष्य मूल रूप से शाकाहारी था।

मांसाहार जलप्रलय के बाद ही शुरू हुआ (उत्पत्ति 9:3)

सभी जीवित प्राणियों के लिए परमेश्वर का प्रावधान

उत्पत्ति 1:30
"और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिनमें जीवन का प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैंने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं," और वैसा ही हो गया।"

परमेश्वर ने सभी प्राणियों के लिए पौधे उपलब्ध कराए - मनुष्य और पशु दोनों मूल रूप से शाकाहारी थे।

यह सृष्टि में परमेश्वर के प्रावधान पर ज़ोर देता है।

सृष्टि पर परमेश्वर की अंतिम स्वीकृति

उत्पत्ति 1:31
"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह **बहुत ही अच्छा है**। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवाँ दिन हो गया।"

उत्पत्ति 1 में यही एकमात्र अवसर है
जब परमेश्वर अपनी सृष्टि को 'बहुत अच्छा'
कहता है जो पूर्णता और सिद्धता दर्शाता है।

न कोई पाप था, न कोई दुख, न कोई मृत्यु - संसार अपनी संपूर्ण अवस्था में था।

बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करती है

उत्पत्ति 1 में **परमेश्वर** का **32 बार** उल्लेख किया गया है।

बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं करती - बल्कि इसकी पुष्टि करती है।

भजन संहिता 14:1: मूर्ख ने अपने मन में कहा है, "कोई परमेश्वर है ही नहीं।'"

सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की भूमिका को स्वीकार करने के लिए **विश्वास आवश्यक है।**

परमेश्वर की सृष्टि उसकी शक्ति और स्वरूप को प्रकट करती है

रोमियों 1:20
"क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।"

संसार स्वयं परमेश्वर का प्रमाण है - उसकी शक्ति, बुद्धि और दिव्य स्वरूप।

उत्पत्ति 1 झूठे विश्वदृष्टिकोणों का खंडन करता है

बहुदेववाद का खंडन करता है - **केवल एक ही परमेश्वर है** जिसने सभी वस्तुओं की रचना की है।

पदार्थ की शाश्वतता का खंडन करता है - "आदि में" दर्शाता है कि **पदार्थ का एक आरंभिक बिंदु था**।

सर्वेश्वरवाद का खंडन करता है - परमेश्वर **अपनी सृष्टि से अलग है**, उसका भाग नहीं।

भाग्यवाद का खंडन करता है - परमेश्वर अपनी इच्छा से कार्य करता है, संयोग या भाग्य से नहीं।

उत्पत्ति 1 की उल्लेखनीय विशेषताएँ

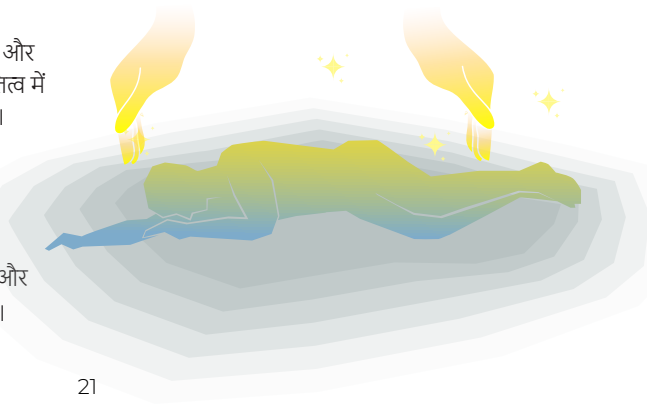
डॉ. मैकगी उत्पत्ति 1: 2 से 31 में **चार प्रमुख विशेषताओं** पर प्रकाश डालते हैं

1. **क्रम**
सृष्टि एक संरचित, तार्किक क्रम का अनुसरण करती है।

2. **प्रगति**
प्रत्येक दिन पिछले दिन पर आधारित होता है।

3. **शीघ्रता**
ईश्वर बोलता है, और वस्तुएँ तुरंत अस्तित्व में आ जाती हैं।

4. **पूर्णता**
सृष्टि दोषरहित और पापरहित थी।



कैसे
उपयोग करें
ईश्वर की बुद्धि को
अपनी परिस्थिति में लागू करें

पढ़ें शास्त्र से जुड़ाव

चिंतन करें इसके बारे में सोचें

उत्तर दें अनुप्रयोग प्रश्नों का

याद रखें इसे अपने अवे अनुभाग में नोट करें।



डॉ. जे वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ हम पवित्र आत्मा की सेवकाई के दिन में जी रहे हैं, अनुग्रह के दिन में, जब परमेश्वर की आत्मा मसीह की बातों को ग्रहण करती है और उन्हें हम पर प्रकट करती है। ”

चिंतन करें और लागू करें

1. **चिंतन:** सृष्टि में परमेश्वर की अद्भुतता

यशायाह 40 परमेश्वर की महानता को शक्तिशाली ढंग से घोषित करता है, हमें याद दिलाता है कि **उसने अपने हाथ की हथेली में जल को नापा** और **आकाश को परदे की तरह फैलाया** (यशायाह 40:12, 22)।

जब हम उत्पत्ति 1:2-31 को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर की सृष्टि उसकी **व्यवस्था, प्रगति, तत्परता और पूर्णता** को दर्शाती है।

- **व्यवस्था:** परमेश्वर ने ब्रह्मांड को एक संरचना के साथ डिज़ाइन किया है—कुछ भी यादच्छिक नहीं है।
- **प्रगति:** उसने उद्देश्यपूर्ण ढंग से सृष्टि की, प्रत्येक चरण पर निर्माण किया।
- **तत्परता:** केवल उसके वचन ने ही सब कुछ तुरंत अस्तित्व में ला दिया।
- **पूर्णता:** पाप के आने से पहले दुनिया दोषरहित थी।

सृष्टि में परमेश्वर की शक्ति को समझने से आपके उसे देखने के तरीके में क्या बदलाव आता है?

अनुप्रयोग

यशायाह 40:26 कहता है, **"अपनी आँखें ऊपर उठाओ, और देखो कि किसने इन वस्तुओं को बनाया है, कौन उनके समूह को गिनकर बाहर निकालता है; वह उन सब को नाम लेकर बुलाता है।**
उसकी शक्ति की महानता और उसकी शक्ति के बल से, एक भी गायब नहीं है"।

पिछली बार आप परमेश्वर की सृष्टि को देखकर विस्मित कब हुएथे?

सृष्टि में परमेश्वर की उत्तम व्यवस्था और शक्ति को जानने से आपको
अपने जीवन के लिए उसकी योजना में कैसे विश्वास मिलता है?

आपको अपने जीवन के किन क्षेत्रों में समर्पण करना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर उसी **व्यवस्था, प्रगति, तत्परता और पूर्णता** के साथ कार्य करता है?

आज परमेश्वर की महानता के लिए चिंतन, स्तुति और धन्यवाद करने के लिए कुछ समय निकालें!



2. **चिंतन:** मनुष्य की रचना में परमेश्वर के उद्देश्य को समझना

उत्पत्ति 1:26-27 में कहा गया है, **"तब परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएँ, अपनी समानता के अनुसार; वे प्रभुत्व रखें...' इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया; परमेश्वर के स्वरूप में उसने उसे बनाया; नर और नारी उसने उन्हें बनाया" (NKJV)।**

डॉ. मैक्गी इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मनुष्य को **आत्मा, प्राण और शरीर** के साथ विशिष्ट रूप से बनाया गया है
(1 थिस्सलुनीकियों 5:23) ताकि:

- **जाना जा सके** आत्मा (आध्यात्मिक संबंध) के माध्यम से परमेश्वर को।
- **समझें** आत्मा (मन, भावनाएँ और इच्छाशक्ति) के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा को।
- **कार्य करें** शरीर के माध्यम से (संसार में भौतिक क्रियाएँ) परमेश्वर के उद्देश्यों पर ।

परमेश्वर ने जानबूझकर मानवजाति को पृथ्वी पर **शासन करने, उसे वश में करने और उसका प्रबंधन करने के लिए बनाया,** जो उसके दिव्य अधिकार को दर्शाता है। पाप के संसार में आने से पहले, आदम ने उसी तरह प्रभुत्व का प्रयोग किया जैसे बाद में मसीह ने प्रकृति पर अधिकार प्रदर्शित किया (मरकुस 4:39, यूहन्ना 6:1-14)।

यह जानना कि आप परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं, आपके जीवन जीने के तरीके को कैसे बदलता है?

लागू करें

नीतिवचन 25:2 - "परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है
परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।"

परमेश्वर ने आपको अपने छिपे हुए खज़ानों को सीखने, खोजने और उजागर करने की क्षमता दी है।

- परमेश्वर ने आपको अपने छिपे हुए खज़ानों को सीखने, खोजने और उजागर करने की क्षमता दी है।
- आप परमेश्वर की महिमा के लिए अपने मन, हृदय और शरीर का उपयोग किन तरीकों से कर रहे हैं? आप अपनी स्वतंत्र इच्छा, नैतिक ज़िम्मेदारी और कार्यों को मसीह के स्वरूप में परिपक्व होने के लिए कैसे बेहतर ढंग से संरेखित कर सकते हैं?



आज प्रार्थना करें, परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उन्होंने आपको अपनी छवि में बनाया है और प्रार्थना करें कि वे आपकी आत्मा, प्राण और शरीर के साथ उनके उद्देश्य को पूरा करने में आपकी मदद करें!

3. **सुसज्जित करें और साझा करें**: उत्पत्ति 1 के सत्य की रक्षा

उत्पत्ति 1:2-31 न केवल ईश्वर की सृष्टि का वर्णन करता है, बल्कि **झूठे विश्वदृष्टिकोणों का खंडन भी करता है**:

- **एकेश्वरवाद** - **केवल एक ही सच्चा ईश्वर है** जिसने सभी वस्तुओं की रचना की है। (बहुदेववाद नहीं)
- **पदार्थ की रचना** - **ब्रह्मांड की एक निश्चित शुरुआत थी** ("आदि में, ईश्वर...") (पदार्थ शाश्वत नहीं है)।
- **ईश्वर की श्रेष्ठता** - वह अपनी **सृष्टि से अलग है,** उसका हिस्सा नहीं है (सर्वेश्वरवाद का खंडन)।
- **ईश्वर की संप्रभुता** - सृष्टि **उसकी इच्छा** से हुई, संयोग या भाग्य से नहीं। (कोई भाग्यवाद नहीं)

आप उत्पत्ति 1 के इन सत्यों का उपयोग दूसरों को बाइबल की सृष्टि और बहुदेववाद, सर्वेश्वरवाद, और भाग्यवाद जैसे झूठे विश्वदृष्टिकोणों के बीच अंतर करना सिखाने के लिए कैसे कर सकते हैं?

लागू करें

विभिन्न मान्यताओं से भरी दुनिया में आप **दूसरों को परमेश्वर के सत्य को देखने** में कैसे मदद कर सकते हैं?



परमेश्वर के वचन को सिखाने में बुद्धि और स्पष्टता के लिए प्रार्थना करें, जिससे दूसरों को सृष्टि में उसके सत्य को समझने में मदद मिले!

आपका निष्कर्ष

अपने जीवन में '**परमेश्वर की बुद्धि**' को समाहित करना।

मैक्गी का उद्धरण



"अध्याय 1 में एक तथ्य यह है कि इस अध्याय में परमेश्वर का बत्तीस बार उल्लेख किया गया है। बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास नहीं करती। क्यों नहीं? क्योंकि परमेश्वर कहते हैं, "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर नहीं है...।" -भजन 14:1"

THRU the BIBLE

हमारे संसाधनों तक पहुँचें

टीटीबी ग्लोबल वेबसाइट तक पहुंचने के लिए, यहां जाएं

www.ttb.org

टीटीबी ग्लोबल ऐप डाउनलोड करने के लिए **क्यूआर कोड** स्कैन करें।
ऐप के ज़रिए आप हमारे ऑडियो स्टडी प्रोग्राम को आसानी से एक्सेस कर सकते हैं।

App Store
IOS उपयोगकर्ताओं के लिए

Google Play Store
एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं के लिए